मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

एम० आर० भक्त
पी. एस. ई. (रीटायर्ड)

वर्ष 7	मंगलवार 10 मार्च 1981	संख्या 11

लेना-देना

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक ७-१२-१९८०

कश्मीर से आये हुए सत्संगियों ने कश्मीरी भाषा में हजूर परम दयाल जी महाराज की आरती की, जिसका अर्थ यह है :—

1. हम आपको ओंकार स्वरूप जानकर आपकी शरण में आये हैं, आपको पूजने आये हैं, आपको शत-शत नमस्कार हो ।

2. हे अन्तरयामी ! आपके चरणों में हमारा कोटि-कोटि नमस्कार हो ।

3. हजारों ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, देवी-देवता और मुनीश्वर, लाखों संत अवतार नतमस्तक होकर आपके द्वार पर खड़े हैं ।

4. अनन्तकोटि सूर्य, चन्द्र, यम और अनन्त विज्ञान के सागर पानी के बुलबुले के सदृश आपके अन्दर समाये हैं।

5. ऋषि, मुनि, देवता सब आपको अपना स्वरूप जान कर आपकी वन्दना करते हैं।

6. मैं आपकी क्या स्तुति कर सकता हूं। जहां व्यास आदि मुनीश्वर भी आपकी महा महिमा का अन्त न पा कर मौन हैं।

7. हे अति-शुद्ध, चारों वेद, उपनिषद् आप के ही गीत गाते हैं।

8. गोबिन्द भी आपको परम तत्व आधार जान कर आपके गीत गाता है।

9. मेरे धर्म तथा कर्म किये बिना ही उस परम संत ने मुझे अपना लिया।

10. मेरे मन, प्राण, बुद्धि सब उसके अर्पण हों, उसके ध्यान में मग्न होकर मैं उसके रूप को चारों दिशाओं में देख रहा हूं।

11. अलख ओंकार के दर्शन अचानक मुझे हुये, मेरे ऊपर दया की दृष्टी करके मुझे भी अगम देश में साथ चलने को कहा ।

12. मेरे सारे पाप, संताप तथा शापों का नाश करके मेरे जीवन को सुखमय बनाया ।

13. मेरा जीवन उसने प्रेममय बनाया । हे गोविन्द, जो संत सतगुरु की शरण जाते हैं वही मुक्ति पाते हैं ।

राधास्वामी । आप लोग कोई बम्बई से, कोई आंध्रप्रदेश से आये हैं । मैं अपनी आत्मा से पूछता हू कि तूने यह क्या खेल रचाया है ? मित्रो ! दुखी और अशान्त प्राणी मेरे पास आते हैं और जो मेरी समझ में आया है वो मैं कहता हूं । हम एक दूसरे से इस संसार में पूर्व कर्मों के अनुसार मिलते हैं जिस जिस का पिछले जन्म का सुख दु:ख अर्थात लेन-देन होता है उसके सस्कार से हम एक दूसरे से मिलते हैं । शास्त्र कहते हैं यह लेन-देन का संसार है । इसलिये एक दूसरे का लेना देना भुगतना होता है ।

परसों सुभाष ने एक बात मुझे बताई कि पंजाब के एक गांव का रहने वाला आदमी नबाव हैदराबाद के पास बड़ा भारी अफसर था। वह प्रत्येक वर्ष गांव आया करता था। यह 1925-26 की बात है कि जब वह गांव आया तो रात को उसने एक स्वप्न देखा। स्वप्न में एक बैल उसके पास आया उस बैल ने उसे कहा कि मैं तेरा दादा हूं। तुम्हारे इस गाँव में एक तेली है। मैं उसके कोहलू का बैल हूं। अब मैं बूढ़ा हो गया हूं मगर इसके अभी 9 रु देने शेष हैं। अगर तू 9 रु० दे देगा तो मेरी जान छूट जाएगी। प्रातः जब वह उठा तो नाई उसकी हजामत करने आया। उससे कहा भई! हजामत पीछे करना। यह बता कि इस नाम का कोई तेली अभी गांव में है? उसने कहा है। चलो मुझे उस के पास ले चलो। वह वहां गया तेली ने उसका बड़ा आदर किया। उसने पूछा कि तेरे पास कितने बैल हैं। तेली ने कहा एक ही बैल है। मुझे बैल की आवश्यकता है यह मुझे दे दो। बोलो कितनी कीमत दूं? तेली ने कहा 9 रु: दे दो। इसने 9 रु: दे दिये और बैल को लेकर चला। मार्ग में बैल गिर गया और मर गया। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं, कि क्या यह

वातें ठीक हैं। मुझे अपने घर की एक घटना का पता है। मेरी तीन लड़कियां हैं। बड़ी लड़की की शादी पर मैंने चालीस तोले सोना दिया और बहुत खर्च किया जबकि दूसरी लड़की की शादी पर मैंने केवल 5 तोले सोना दिया और कुल 1500 में शादी कर दी। मेरी पत्नी मुझ से हमेशा कहा करती थी कि तूने न्याय नहीं किया। बड़ी लड़की को 40 तोले सोना दिया, इसको तुमने कुछ भी नहीं दिया। जब वह मुकलावे जाने लगी तो मैंने कहा बेटी ! पिछले जन्म का 700 रु: मैंने और देना है। अब ले ले मेरा तेरा सम्बन्ध टूट जाएगा। लेना हो तो अब ले लो परन्तु अच्छा होगा जब तू मकान बनाएगी तो मैं यदि जीवित रहा तो दे दूंगा या तुम अपने भाई से ले लेना या पुरुषोत्तम दास से ले लेना। बात आई चली गई। मेरी पत्नी ने मुझको गलत समझा। चार वर्ष वाद वह बीमार हुई उसका पति उस समय इतना पैसे वाला नहीं था। मेरी पत्नी मुझे मजबूर करती थी मैं हर मास 100-100 रु: 6 महीने उस को बीमारी के इलाज के लिए कोयटे भेजता रहा। सातवें मास

मैंने पुरुषोत्तम दास को लिखा कि भाई ! 100 रु: का ड्राफ्ट लेकर मेरे दामाद देसराज को कोयटे भेज दे और मैं रेलवेपास लेकर अपनी पत्नी को कोयटे छोड़ आया कि जाकर देख ले तेरी लड़की मर जाएगी। लड़की मर गई। यह मेरा अनुभव था।

दूसरा अनुभव मेरा लड़का शाहपदम-जंग पैदा हुआ। उस समय मेरे अनुभव ने कहा मैंने इसका देना है लेना नहीं। वह 3000 रु: वेतन लेता है। मैंने आज दिन तक उसकी कमाई का एक पैसा नहीं खाया। अपनी बहन के लिये भेजता है। मेरा प्रबन्ध बाहर बना हुआ है। मैं उससे नहीं लेता और न ही मैंने लेना है। एक बार रूस से घड़ी ले आया। मैंने कारखाने में उतार कर रखी, कोई ले गया। मैंने कहा अच्छा हुआ। इन अनुभवों से मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि हम जहां एक दूसरे से पिछले लेने देने के कर्मों के कारण लेने देने के सम्बन्ध से मिलते हैं। कोई किसी का पिता बन जाता है, कोई किसी का पुत्र बन जाता है, कोई किसी का भाई बन जाता है। किसी को कोई दुख दिया होता है किसी को सुख। दु:ख सुख का सब संसार है। अगर यह बात समझ

में आ जाए तो हम लोग जो इस दुनिया में हाय-हाय करते फिरते हैं यह समाप्त हो जाए। मेरे पास ऐसे आदमी आते हैं जिसकी उनकी पत्नियों से से नहीं बनती। उनके पिछले जन्म के सम्बन्ध होते हैं जिनके कारण यह समस्या होती है।

तुम लोग आते हो मैं सोचता हूं कि यह क्या खेल है? लेना देना। कोई गुरु बन कर लेता है, कोई चेला या भाई बन कर लेता है। कोई बेटा या चाचा बन कर लेता है। कुछ नहीं होता तो चोर या डाकू बन कर ले जाता है। तो यह संसार है क्या? लेन देन का संसार है।

लाहौर में एक बड़े प्रसिद्ध पण्डित थे। उनकी पत्नी बड़ी निम्न प्रकृति की थी। वह बड़े भारी ज्योतिषी थे। बड़े बड़े आदमी उसके पास आते और पूछते कि पण्डित जी, क्या बात है। आपकी पत्नी यह क्या करती है। वो कहते कि यह पिछले जन्म का कुछ योग है। इसका हमसे कुछ लेना-देना है। आप लोग मेरे पास आते हैं, मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा।

यह मैंने साबित कर दिया कि हमारा एक दूसरे का लेन-देन है अत: लेना-देना पड़ता है ।

इस का एक प्रमाण तो मैंने अपना दे दिया एक सुभाष द्वारा दे दिया अब तीसरा उदाहरण सुन लो । मैं म्यानी स्टेशन पर A.S.M. था । मेरी आदत है जहां मैं रहता था वहां मेरा एक (Private Doctor) रहता था । वहां एक कट्टर आर्यसमाजी आज्ञा राम मेरा (Family Doctor) था मगर वह ज्योतिष को मानता था । उस समय में आर्य-समाज अन्य धर्मों को बहुत समालोचना करता था । मैंने आज्ञा राम से पूछा डाक्टर जी ! आप आर्यासमाजी होकर ज्योतिष को क्यों मानते हो ? उसने कहा मेरे साथ एक घटना हुई । वह घटना क्या ? मैं म्यो हस्पताल में पढ़ता था । जब मैं अनारकली से जा रहा था तो किसी व्यक्ति ने पीछे से मेरी पीठ पर हाथ रखा । मैंने मुड़ कर देखा वह काले रंग का आदमी था और माथे पर तिलक लगाये हुये था । आंध्रप्रदेश का मालूम होता था उसने पूछा तेरा नाम क्या है ? आज्ञा राम । क्या काम करते हो ?

डाक्टरी पढ़ता हूं। बात सुनो ! मुझे पीठ पर फोड़ा है। मैंने ज्योतिष लगाया कि फोड़ा मुझे क्यों है ? 12 वर्ष हो गये जाता नहीं। मालूम हुआ कि मैंने किसी आदमी से 100 रुपए उधार लिये थे उसको वापिस नहीं किये। उसी कारण मुझे यह फोड़ा है। फिर मेरे ज्योतिष ने कहा कि वो आदमी जिस का मैंने रुपया देना है फलां दिन फलां समय अनारकली में मिलेगा। नाम के पहले आ होगा, डाक्टरी पढ़ता होगा। इसलिए मैं आज तुम्हारे पास आया हूं। यह 100 रु० ले लो और मेरा ईलाज कर दो। आज्ञा राम ने कहा है कि मैंने उसकी बात को मज़ाक समझा। मैंने 100 रु० लेकर जेब में डाल लिये और कार्वनलोशन से तीन दिन फोड़ा साफ कर के पट्टी कर दी और वह ठीक हो गया। जब वह ज्योतिषी चलने लगा तो उसने कहा भाई ! पिछला कर्ज़ा तो समाप्त हो गया अब तूने मेरा ईलाज किया है। मेरे पास तो देने को कुछ नहीं है। तुम्हारा टेवा हो तो मैं जन्मपत्री बना देता हूं। टेवा था; उसनै मेरी जन्मपत्री बना दी। वो कहता था कि जो कुछ उसने मेरे लिए कहा शत प्रतिशत

ठीक है। इसीलिए मैं ज्योतिष को मानता हूं। इन बातों से क्या साबित हुआ ? कि हम इस संसार में रहते हैं यदि किसी से अनावश्यक फायदा लेते हैं या किसी से ऋण ले लेते हैं देते नहीं या अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं निभाते तो यह सब हमारे कर्मों का चक्कर बन जाता है। मैं इसीलिए सत्संगों में स्पष्ट कहता हू क्योंकि मैं डरता हूं कि अगर मैं बात को पर्दे में रखकर तुम लोगों से पैसा ले लूं तो जो यह धोखा मैं करुंगा जब मैं कर्म के कानून को देखता हूं तो मैं बच नहीं सकता। खबर नहीं कि मेरा क्या हाल होगा। आप मेरी बातों को समझ गये होंगे। मुझे भाषण देना नहीं आता। मैं तो बातें करता हूं। इससे साबित होता है कि हम इस संसार में कर्जदार हैं। लेने देने के सम्बन्ध हैं। इसलिए मैं कहता हूं कि ऐ इन्सान! अपनी ज़ाति गरज़ के लिऐ धोखा, फरेब, चार सौ बीस और हेरा फेरी मत कर। इस बात को भूल जा कि तूने नाम लिया हुआ है, अभ्यास करता है या यह करता हैं जो कर्म हमने तुमने किये हुऐ हैं उसके फल से हम या तुम कोई भी बच नहीं सकता। यही मैं कहना चाहता हूं।

यहां एक मैनेजर साहिब आये हुए हैं। उनका लड़का है। 5-6 वर्ष हो गये शरीर नहीं चलता बल्कि केवल बोलता है। अब दुखी हैं। यह क्या है? यह पिछले जन्म का आपस में एक दूसरे का दु:ख दिया हुआ है वो दु:ख लेना पड़ता है। इससे कोई बच नहीं सकता। जब लेना-देना खत्म हो जाता है आदमी चला जाता है इसीलिए मैं बहुत सोच कर चलता हूं। हेरा फेरी और चार-सौ-बीस नहीं करता। हर कार्य में अधिकार, अनाधिकार को विचार कर बड़ा विचार पूर्वक पांव रखता हूं, ऐसा क्यों करता हूं? यह समझ कर कि इस संसार में कर्म का फल लेना-देना पड़ता हैं। तुम आँध्रप्रदेश वाले लोग आये हो। मैं एक जिम्मेवारी समझता हूं। मैंने यह काम क्यों किया? क्योंकि यह मेरे कर्म थे मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। अब मैं सोचता हूं कि आदमी इस कर्म के चक्कर से तो नहीं निकल सकता। बचने का कोई उपाय है? वरना सारा जीवन हमेशा यह कर्म का चक्कर तो चलता रहेगा। जन्मते रहेंगे, मरते रहेंगे, फिर जन्मते रहेंगे, मरते रहेंगे। इससे निकलने का कोई

तरीका है ? इसके लिए संत क्या कहते हैं ? आप को स्वामी जी की वाणी सुनाता हूं :—

सतगुरु शरण गहो मेरे प्यारे, कर्म जगात चुकाये।

वो कहते हैं कर्म की जुगात यानि अगर तुम कर्म के फल या लेने देने के चक्कर से बचना और इसे समाप्त कर देना चाहते हो तो सतगुरु की शरण लो। अब मैं सोचता हूं कि कोई आदमी किसी गुरु की शरण ले ले यानि उसको गुरु धारण करले तो क्या उसके कर्म कट जाएंगें ? यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूं। केवल किसी को गुरु धारण करने से तुम्हारे कर्म नहीं कटेंगे। सतगुरु सच्चे ज्ञान का नाम है। किसी सच्चे गुरु के पास बैठकर सच्चा ज्ञान प्राप्त करोगे, जब सच्ची बात समझ में आएगी, सच्चा अनुभव तुमको हो जाएगा तब तुम्हारे कर्म की जुगात कटेंगी। केवल फकीर चन्द को या किसी और गुरु को गुरु बना लेने से, उससे नाम दान ले लेने से अगर तुम यह चाहो कि तुम्हारे कर्म कट जाएेगें यह नहीं कटेंगे :—

भूल भ्रम में सब जग पचता, अचरज बात न काहु सुहाये,
भाग हीन सब जग माया बस, यह निर्मल गति न कोई पाये।

मैंने आप को बता दिया कि सतगुरु सच्चे ज्ञान, सच्चे अनुभव, सच्चे भेद या सच्चे राज को कहते हैं। वह कहते हैं कि संसार भ्रम में फंसा हुआ है इस सच्चे ज्ञान की गति को राज़ या भेद पाये बिना कोई प्राप्त नहीं कर सकता। वो भेद है क्या? यही कि हमारे मन में जितने संकल्प विकल्प उठते है, जितनी शक्लें बनती हैं या जितने ही रूप रंग और दृश्य आते हैं यह सब माया है। इसके पीछे मत लगो। केवल प्रकाश और शब्द को पकड़ो ताकि जब तुम्हारा अन्त समय आये तुम्हारे मन के अन्तर रूप रंग न आने से मन के चक्कर को छोड़ कर तुम्हारी सुरत पारब्रह्म और शब्द ब्रह्म में चली जाए। इससे क्या होगा? जितने भी मन के चक्कर में रहते हुए तुमने पाप-पुन्य, लेना देना जो कुछ कर्म आपने किया हुआ है क्योंकि आप मन के मण्डल से निकल कर प्रकाश के मण्डल में चले जाओगे। इसलिए यहां का कानून वहां प्रभाव नहीं डालेगा लाख तुमने पाप या जुर्म किये हुये हैं मगर मरते

समय यदि तुमको प्रकाश और शब्द आ जाएगा तो जितने भी तुम्हारे कर्म हैं वो तुम पर प्रभाव नहीं डालेंगे। क्यों? हिन्दुस्तान में जो जुर्म तुम करोगे अगर यहां से भाग कर अमेरिका चले जाओ तो यहां का कानून वहां प्रभाव नहीं डालता तुमको वहाँ कोई पकड़ेगा नहीं। ऐसे ही जो हमारे कर्म का चक्कर है यह सब हमारे मन के तबके में है। जब हम मन के तबके से निकल जायेंगे तो जितने भी हमने पाप और पुन्य किये हुये हैं यह सब समाप्त हो जायेंगें। इसलिए कहा गया है :—

नाम रत्ती एक है, पाप जो रत्ती हज़ार,
आद रत्ती घट संचरे, जार करे सब छार।

नाम क्या है? अपने आप को प्रकाश और शब्द में लय कर देने व उस अवस्था में चले जाने का नाम नाम है। तो इस कर्म से बचने का तरीका क्या है? ऐ निर्मला! तू इतना किराया खर्च कर तीन चार व्यक्तियों के साथ सत्संग के लिए बम्बई से आई है। बेटी, मैं तुमको प्यार करता हूं। तुम्हारे अज्ञान और प्यार का अनुचित लाभ नहीं

उठाना चाहता। मैंने तुम्हें अमरनाथ में डूबते हुए नहीं बचाया और न ही मुझे इस घटना का पता है। यह सब तुम्हारे अपने ही मन और विश्वास का खेल था।

तुम अपने जीवन में अपना इष्ट प्रकाश और शब्द रखो ताकि जब तुम्हारा शरीर छूटे तो तुम्हारे सामने प्रकाश आ जाये। यही प्रकाश की तालीम हमारे सनातन धर्म में है। जब आदमी मरने लगता है तो उसके सामने दीया रखते हैं। क्यों रखते हैं? मरने वाले को यह स्मरण कराते हैं कि तेरा घर नूर या प्रकाश है। इसीलिए उसे स्मरण कराया जाता है। तो इस कर्म के चक्कर से बचने का इलाज क्या है? कि इन्सान अपना ईष्ट प्रकाश और शब्द रखे। प्रकाश और शब्द का साधन करे और इस बात का ज्ञान प्राप्त कर ले कि मन का यह जितना चक्कर है यह सब कल्पित है, माया है। जब तक यह ज्ञान किसी को नहीं होता लाख कोई फकीर चन्द को या किसी को भी गुरु मान ले उसका बेड़ा पार नहीं होगा। यह वास्तविकता है जो मैंने कही है। आज दिन तक किसी महात्मा ने इस

तरह स्पष्ट नहीं बताया। मैं पहला आदमी हूं जिसने इस सच्चाई का डंका बजाया है। शब्द था :-

सतगुरु शरन गहो मेरे प्यारे, कर्म जगात चुकाये।

अब समझ गये कि सतगुरु शरण क्या है ? किसी कामिल और निर्बन्ध पुरुष की संगत में जाओ जिसने यह गुरुआई अपने जाति मतलव या डेरे के लिए नहीं को है। जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए गुरुआई की है वो तुमको सच कैसे बतायेंगे। वो तो तुमको कहेंगे कि हर महीने आओ, पैसे देते रहो और हमारे जाल में फंसे रहो। तो सतगुरु नाम किसका है ? सच्चे ज्ञान का। मैंने जो समझा है वो मैं कहता हूं। मैं यह दावा नहीं करता कि मैं जो कहता हूं यही अन्तिम है। शायद मैंने जो कुछ समझा हो गलत हो। मुझे इसका कोई डर नहीं। क्योंकि मेरी नीयत साफ है। मैंने स्वय जो अनुभव किया वो कहा। दावा नहीं करता :—

भल भ्रम में सव जग फंसता, अचरज वात न काहु सुहाये।

अब मैं जो सच्ची बात कहता हूं कि कोई राम, कोई देवी, कोई मुहम्मद किसी के अन्दर नहीं जाता। यह सब तुम्हारे मन के संकल्प और संस्कार का खेल है। कोई सच्चाई को सुनने के लिए तैयार नहीं है सब भागते हैं :—

भागहीन सब माया वस, यह निर्मल गति कोई न पाये ।

निर्मल गति क्या है ? जब तुम मन के संकल्पों को बिल्कुल छोड़ जाओगे तो शेष क्या रहेगा ? प्रकाश ! वो तो निर्मल है ही। वो कहते है कि सारा संसार भाग्यहीन है। उसको उसको समझ नहीं है :—

जिन पर दया आद कर्त्ता की सो यह अमृत पीवन चाहे।

कितनी सच्चाई बताई है। कहते हैं यह बात सब कुछ है। मगर जिस पर परमात्मा की दया होती है वो इस ओर आता है। प्रत्येक व्यक्ति नहीं आ सकता। ध्यान दो, यहां सतगुरु की दया नहीं बल्कि आद कर्त्ता की दया लिखी हुई है :—

कहां लग महिमा कहूं इस गत को,
विरले गुरुमुख चीनत ताहे ।

वो कहते हैं इस अवस्था को यानि इस सत-ज्ञान की प्राप्ति को। इसमें ठहरने की गति को कोई विरला गुरुमुख ही पाता है। मैं सत हो गया मगर मुझ से अभी तक वहां ठहरा नहीं जाता। मैं आपको सच्ची बात कहता हूं। मैं जान गया हूं मगर यदि मैं वहां ठहरना चाहूं तो वहां ठहर नहीं सकता। फिर मन में आ जाता हूं। क्या करूं ? यह अपने वश की बात नहीं। मैं स्वयं सोचता हूं कि भाई! तूने इतना जीवन सफर किया तू वहां पूर्णत: नहीं ठहर सकता तो दुनिया से तू क्या आशा करता है। आप गृहस्थी क्या करोगे :—

बिन गुर चरन और नहीं भावे, इस आनन्द में रहे समाये।

अब देखो वो कहते हैं कि बिना गुरु चरण के दुनियां ने जो बाहरी गुरु के चरण है उनको गुरु चरण समझा हुआ है। यह भी किसी हद तक है

राधास्वामी मत के संचालक राय सालिग राम साहिब ने अपनी प्रेम बाणी में लिखा है। सतगुरु कौन है ? सतगुरु शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल उनके चरण प्रकाश है । यही हिन्दुशास्त्र व गायत्री-मन्त्र कहता है । इस संतमत और सनातन धर्म में कोई अन्तर नहीं है । सच्चाई कोई नहीं बताता और फिर करे भी क्या लोग अमल नहीं कर सकते। अमल करना कोई आसान है ? मेरी आयु बीत गई मैंने बहुत साधन किया। अब भी हर समय यदि मैं चाहू कि मन को छोड़ कर उधर चला जाऊं । किसी समय ऐसे हालात होते हैं मन इतना चंचल होता है कि मैं कितना भी प्रयत्न करता रहूं एकदम प्रकाश और शब्द में नहीं जा सकता। फिर मैं क्या करता हूं। फिर मैं सुमिरन करता हूं । तब ध्यान में जाता हूं, तब मैं ऊपर जाता हूं । यह बड़ा मुश्किल कार्य है । मगर इसका एक ही तरीका है कि चले चलो। यदि समझ में बात आ जाये तो धीरे २ चलते रहो, तप करते रहो। कोई न कोई कारण बन जाएगा :—

दर्शन करत पिण्ड़ सुध भूलि, फिर घर वाहिर सुध क्या आये।

देखो ! बाहिर में भी प्रेम है। जब अन्दर में प्रेम करता है तो सुध भूल जाती है। न घर, न पुत्र याद रहता है। जब तुम अभ्यास करने लगते हो अभ्यास करो तो अपने आप ही भूल जाते हो :—

ऐसी सुरत प्रेम रंग भीनी, तिनकी गति क्या कहूं सुनाये।

वो कहते हैं ऐसी सुरत जो इस तरह प्रेम में अपने अन्दर चलती है वो बहुत उत्तम है। उसकी गति मैं क्या कहूं :—

योग, विज्ञान, ज्ञान सब रूठे, ये गत उनमें देखे न ताहे।

किनसे प्रेम ? उस परम तत्व से। क्योंकि उसका कोई रूप नहीं है। इसलिए प्रारम्भ में उसको किसी न किसी रूप में मानना पड़ता है। परन्तु यदि तुम सारी उमर बाहरी गुरु के पीछे लगे रहो तो फिर काम नहीं बनेगा। मैं नहीं चाहता निर्मला, तुम लोगों को हमेशा फकीर चन्द के साथ बांध रखूं। कल को फकीर चन्द मर जाएगा। फिर रोयोगे

सिर पीटोगे। फिर कहां जाओगे ? इसलिए मैं दात को साफ कर जाना चाहता हूं ताकि आप लोगों को मेरे मरने के बाद कोई दूसरा गुरु न करना पड़े। बात तुमको सच्ची बता दी कि यह बात ऐसे नहीं ऐसे है। शेष संसार का काम है। सतसंग में व्यक्ति जाता रहता है और आता रहता है। इसका कोई प्रश्न नहीं :—

बडभागी कोई विरला प्राणी, जिन यह निहमत पाई।

कोई भाग्यशाली व्यक्ति को ही खबर हो सकती है। जिसको लगन होती है। मुझे बचपन से लगन थी। अब मैं पहुंच तो गया, इस कर्म की जुगात से निकलने की युक्ति आ गई, तरीका मिल गया। मुझे रास्ते का तो पता चल गया मगर अभी हमेशा के लिए नहीं निकल सका। यानि मुझसे वहां ठहरा नहीं जाता। सच्ची बात आपको बताता हूं :—

राधास्वामी कहत सुनाये, यह आरती कोई गुरुमुख गाये।

निर्मला ! तू परमार्थ के विचार से हो मेरे साथ

लगी है। इसलिए मैं अपना कर्त्तव्य आज पूरा कर देता हूं। गुरु तेरे अन्दर रहता है न कि होशियारपुर में रहता है। मेरा शरीर भी गुरु नहीं है। गुरु ज्ञान, समझ और विवेक का नाम है। क्योंकि वहां सुरत नहीं जाती इसलिए उसका एक रूप मानना पड़ता है। जब वो रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है अपने किसी गुरु का या और का उस को यह मत समझो कि वो फकीर चन्द या किसी और गुरु का रूप है। उसको यह समझो कि वह परम तत्व का रूप है। जिस तरह यह दाता दयाल की मूर्ती है। हम इसे पत्थर तो नहीं कहते। ऐसे ही जो रूप तुम बनाते हो। उसे यह मत समझो कि वो राम है जो दशरथ के घर पैदा हुआ है या यह कृष्ण है जो गोकुल में पैदा हुआ या यह फकीर चन्द है जो होशियारपुर में रहता है। उसको परम तत्व का रूप समझो। उस को पूर्ण मानो। सब कुछ मिल जाएगा। मैंने कभी सोचा ही नहीं कि मेरा गुरु मरा हुआ है। तो इससे क्या हो जाएगा ? तुम्हारा जो साधन है अगर शब्द प्रकाश नहीं खुला क्योंकि तुम ने उस रूप में शब्द व प्रकाश माना हुआ है।

हो सकता है तुम्हारा कल्याण हो जाये क्योंकि तुम ने उस को शब्द और प्रकाश स्वरूप माना हुआ है और जो तुम गुरु के रूप को समझोगे तो तुम लाख प्रयत्न करते रहो तुम्हारा बेड़ा पार नहीं हो सकता। हां तुमको दुनिया मिल जाएगी। सिद्धि शक्ति आ जाएगी। इसलिए कबीर साहिब ने कहा है :—

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिए अंध,
दुखी होए संसार में, आगे यम का फंद।
गुरु किया है देह को, सतगुरु चीना नाहिं,
कहे कबीर-ता दास को, तीन ताप भरमाहिं।

मैं स्पष्ट क्यों बताता हूं ? ताकि जो लोग मुझ पर विश्वास करते हैं मैं उनको अज्ञान में न रखूं। उनको धोखे में नहीं रखना चाहता। अगर मेरा ही रूप देखते हो तो उसको मत समझो कि जो रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है वो मेरा है। मैं तो स्पष्ट कहता हूं कि मैं कहीं नहीं जाता। उसको पूर्ण मानो तुम्हारा काम बन जाएगा। मैंने रास्ता बिल्कुल आसान कर दिया। कोई कठिनाई नहीं। मन के अन्तर तरह तरह के विचार आते हैं इनको माया समझो, हैं नहीं, यह कल्पना है। बस इतनी

हो बात है। ज्यादा और झगड़े की बात नहीं। बेटी तू तो मेरे पास आती है मेरे पास केवल शुभ भावना के और कुछ नहीं। तुम मुझे बम्बई बुलाना चाहती हो। मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया। फिर भी यदि सेहत रही तो आ जाऊंगा। तुम जो इतना रुपया खर्च करोगी अपनी जिम्मेवारी और अपनी जेब आप देखो। मुझे नहीं पता। मेरे जिम्मे कोई पाप नहीं। मैंने आपको धोखा नहीं दिया, किसी से हेरा फेरी नहीं की, किसी को अपने जाल में फंसाने की कोशिश नहीं की। सच्ची बात बता दी। आज सतसंग में मैंने बता दिया कि हम इस संसार में क्यों आते हैं हम एक दूसरे के ऋणी हैं। यह गोपाल दास है मुझे याद है 30 वर्ष हुए मेरे मकान में आया यह पहली बार मिला मेरी पत्नी बैठी हुई थी। मैंने कहा भाग्यवान ! पिछले जन्म का लेना देना है। इसने देना है यह आ गया है सेवा करेगा। आज देख लो इसने उसकी सेवा की। अब इसके बाल-बच्चे हैं। मेरी लड़की है उसकी सेवा करते हैं। तो क्या है यह ? यह

पिछले जन्म का लेना देना है। हम एक दूसरे के ऋणी है। तो मैं यह असूल रखता हूं कि खुशी से अगर मेरे दिल में किसी को देने का भाव आता है मैं दे देता हूँ। तो मैं यह समझता हूं कि मैंने इसके पिछले जन्म का देना है। मेरे पास कई ऐसे आदमी आते हैं कोई चीज़ अपने आप खुशी से देते हैं तो इसका अर्थ है कि इसने पिछले जन्म का मेरा देना था। अगर मैं यह इच्छा रखूँ कि यह मुझे दे और फिर मैं उसे रखूँ तो वो मेरा कर्म बन जाएगा। क्योंकि मैंने अपनी गरज़ रखी कि वो व्यक्ति मुझे यह दे दे या आप मुझे यह दे दें और उसके लेने के लिए मैंने कुछ बातें की या हेरा फेरी की वो जो इच्छा करके तुमसे लूंगा वो मेरा कर्म बन जाएगा। स्वभाविक अगर कोई व्यक्ति प्रेम से कोई वस्तु देता है वो तो पिछले जन्म का लेना देना भुगतता है। यह विशेष बात है। मुझे वर्णन करना नहीं आया। मैं जो कुछ कहना चहता हूं उसे समझो। हम स्वभाविक खुशी से जो कुछ देते लेते हैं वो हमारा पिछला कर्जा समाप्त होता है और अगर

हम कोई काम स्वार्थ के लिए करते हैं तो फिर वो हमारा कर्म बन जाएगा ।

तो आप लोग आते हैं । हम सब को एक दूसरे से दु:ख सुख आते रहते हैं । बाकी निर्मला बेटी, घरों में शान्ति रखा करो । तुम को बता देता हूं । कोई पुत्र नहीं कोई पुत्रवधु नहीं, कोई पति नहीं, कोई माता नहीं, कोई चाचा नहीं । यह तो चार दिन का खेल है । बेटी जब तक खेल है खेल खेलो । अपना यह विचार रखो कि आप तथा मैं यहां के रहने वाले नहीं हैं । यह तो चार दिन का जीवन है । आज गये, कल गये, परसों गये । चले जाएंगे बस । जो कुछ है तेरा अपना मन है अपने मन को सम्भाल कर रखो । खुशी का जीवन बिताओ । बस हम तो एक जानते हैं जिसने पैदा किया है वह खाने को रोटी तो देगा ही । यह सारी दुनियां अपने ही मन के चक्कर में आकर अपने ही मन की चाल में फंसी हुई है । जीवन में अपने मन को विचार के साथ मत बांधो । आपना इष्ट वह रखो, बस । मरने से पहले प्रकाश और शब्द

को पकड़ो । सच्चे बनो । पुकार करो । मालिक सब का है । गुरु सदा तुम्हारे साथ है वह तुम्हारा है तुम उसके हो । अगर संसार सागर से तरना चाहते हो तो अपने अन्तर साधन करो ।

सत्संग हुज़ूर परम दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 16-11-1980

राधास्वामी । "सारी दुनिया", नामक पत्रिका जो ब्यास से प्रकाशित होती थी उस में मैंने एक विषय पढ़ा था उस में लिखा था कि हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने सत्संग में कहा था— "सुनो भाईयो मेरे दुखड़े"। आज मैं भी कहता हूं — "सुनो भाईयों ! मेरे दुखड़े" ! उनके दुःख कोई और होंगे । दुःख तो सभी को हुये । दाता दयाल जी ने पिछली आयु में नौनिद्धराय नामक सत्संगी को पत्र लिखा था कि खुदा मुझको इन सत्संगियों से बचाये । मेरे दुःख क्या हैं ? एक दुःख

तो यह है जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के विरुद्ध कहता है, विरोध करता है उससे मुझको दुःख लगता है। दूसरे जब तुम लोग आकर मेरी प्रशंसा व खुशामद करते हो कि मैंने यह कर दिया और मैं ऐसा हूं, मैं अवतार हूं, मैं मालिके कुल हूं, ऐसी खुशामद कोई करता है तो अगर मैं उसके खुशामद भरे शब्दों से प्रसन्नता अनुभव करूं और उसको बोलने की आज्ञा दूं तो वो मेरे जीवन को बिगाड़ने का कारण होगा। स्तुति, प्रशसा व निन्दा दोनों ही मेरे लिए दुखदाई हैं। इसलिए मैंने अपनी जिन्दगी में जो कुछ भी काम किया वो यथार्थ किया यानि न रोचकपना लिया न भयानकपना लिया बल्कि स्पष्ट शब्दों में जो कुछ मेरी समझ में आया वो कहा।

अब मेरे दुखड़ों का हाल सुन लो। बर्षों हुये एक गद्दी पती ने मुझे लिखा कि वो अन्दर गया वहाँ महर्षि जी उसे मिले उन्होंने उसे कहा कि फकीर चन्द को कह दो कि अभ्यास खूब किया करे तथा सब के साथ प्रेम किया करे। मैंने उसको लिखा

कि तेरे अन्दर कोई नहीं आया यह तेरा अपना ही मन था। अगर महर्षि जी ने कहना होता तो मैं उनको ज्यादा प्यारा था या तुम ज्यादा प्यारे थे। उन्होंने सीधे मुझे क्यों नहीं कह दिया? यह बात मैंने किताब में लिखी थी। इसको सुनकर उसके एक सिन्धी शिष्य को क्रोध आया। उसने मुझे अपशब्द भरा पत्र लिखा। कोई गाली छोड़ी नहीं। नीचे लिखा था 'सिन्धी', लेकिन उस पत्र में पता नहीं लिखा था। यह दुनिया है क्या? पक्षपात नहीं तो और क्या है। कोई व्यक्ति सच्चाई के सुनने को तैयार नहीं।

थोड़े दिन की बात है कि यहां विश्व हिन्दु सम्मेलन हुआ था। वहां बटाले का एक प्राध्यापक था उसने कहा कि मानवता मन्दिर का संचालक फकीर चन्द हिन्दु ज़ाति का शत्रु है। जब पूछा गया कि वह क्या शत्रुता करता है तो उसने कहा- यह उन बच्चों को स्कूल में लेता है जिसके माता-पिता यह लिख देते हैं कि हम तीन बच्चों से अधिक बच्चे पैदा नहीं करेंगे या अगर ज्यादा हैं तो और

पैदा नहीं करेंगें। वह हिन्दु जाति का शत्रु है कि यह परिवार-नियोजन हिन्दुओं के लिए है और जातियों के लिए नहीं है। कुछ समय पश्चात् हम हिन्दु कम हो जायेंगे यह दूसरी जातियां बहुमत में आ जायेंगी और हमारे पर शासन करेंगीं। जिस राजनैतिक दृष्टिकोण से उसने यह बात कही मैं उससे सहमत हूं मगर फकीरों का इस राजनैतिक विचार से कोई सम्वन्ध नहीं है। अत: मैं इस शर्त को उड़ा दूंगा क्योंकि मैं किसी को नाराज करने के लिए नहीं आया। यह दुखड़े हैं जो मैं आपको सुना रहा हूं।

कल एक व्यक्ति ने लुधियाना से मुझे पत्र लिखा जिसमें लिखा था कि आप कहते हैं कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता तथा आप कहते हैं कि मैंने तालीम को बदल दिया। गुरु नाम ज्ञान का है, समझ का है, विवेक का है यह बात तो कबीर साहिब ने पहले भी कही है :—

गुरु किया है देह को, सतगुरु चीना नाहिं"
कहें कवीर ता दास को, तीन ताप भरमाहीं।

सनातन धर्म वालों ने भी कहा है— "गुरु अखण्ड मण्डलाकारं"। उसने मुझे ताना देकर लिखा है कि आप ने नई वस्तु क्या पैदा की, यह तो पहले ही लिखा हुआ है। मैं कहता हूं, यह ठीक है मगर इस समय कौन सा ऐसा सत्संग है जो यह सच्चाई बताता है? किताबों में लिखे हुये को क्या करें कोई सच्चाई नहीं बता रहा। जो ज्ञान गुरु दे गये उस पर चल कौन रहा है? क्योंकि उस पर कोई चल नहीं रहा इसलिए मुझे मजबूरी हुई कि मैं स्पष्ट कह जाऊं। अधिकतर इस समय गद्दीपती हम लोगों को अपने जाल में फंसाने का प्रयत्न करते हैं; आजाद करने का प्रयत्न न करते। इसका परिणाम हम में पक्षपात है, हम में झगड़ा है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द! तूने क्या लिया? तुम्हें इस काम को करने से क्या मिला या यूं ही कष्ट और दु:ख तुमने अपने सिर पर ले लिया। कोई आलोचना अर्थात नुक्ता चीनी करता है, कोई गलत ढंग से प्रशंसा करता है। अत: इस विचार से मैं दु:खी हूं मगर मैं विवश हूं क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा और दाता ने कहा था तालीम बदल जाना। अब

मगर हम प्रातः से शाम तक कर्म क्या करते हैं, इसके बारे कोई नहीं सोचता। मैं केवल इस बात पर जोर देता हूं कि अमल करने से कल्याण होगा। केवल राम-राम जपने या गुरु-गुरु करने से तुम्हारा या किसी का कल्याण नहीं होगा। ऐ इन्सान! इस बात को भूल जा कि तू प्रातः से शाम तक माला जपता हैं, कानों में उंगलियां डाल कर समाधियां लगाता है, समाधियां लगाने से आनन्द, मस्ती व खुशी मिलेगी। मगर जो कर्म तुमने किये हुये हैं उनके फल से तुम बच नहीं सकते। इसलिए ऐ इन्सान! अपनी नीयत को साफ रखके अपने अमल और अपने कर्म को ठीक कर वरना लाख तू किसी गुरु व खुदा का शिष्य बन जा जो कर्म तूने किये हुये हैं उससे तू बच नहीं सकता।

मैं अपने दुखड़े बता रहा था। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तूने यह मुसीबत अपने सिर पर क्यों ली, बदनामी अलग सहता है और अगर लोगों के प्रशंसा करने पर तू खुशी मनाता है तब तो तू डूब गया। फिर सोचता हूं

कि तू इस उलझन में क्यों पड़ा ? यह मेरे कर्म हैं। एक औरत एक आदमी को पति मान लेती है और आदमी उसको पत्नी मान लेता है इससे उस पर एक जिम्मेवारी आ जाती है। बचपन से दाता-दयाल पर मेरा एक विश्वास था कि वह मालिक के अवतार हैं। वो मालिक के अवतार थे या नहीं थे इसका मुझे ज्ञान नहीं मगर मैंने उन्हें माना था। चूंकि मैंने आप ही माना था अतः अब स्वयं ही मैं फंसा हुआ हूं। जो आज्ञा उन्होंने मुझे दी उसका मानना मेरे लिए आवश्यक हो गया। उन्होंने मेरे लिए कहा था :—

तेरा रूप है अद्भुत, अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल स्नेही।

अब अगर उनकी आज्ञा को पूरा नहीं करता तो मेरी भावना, मेरी अन्तःकरण; यह कहती है कि एक पवित्र विभूति ने मेरे साथ इतना एहसान किया, मेरे अज्ञान को मिटाया, ज्ञान दिया अतः अब मैं उन द्वारा दी गई आज्ञा को नहीं मानता तो मैं दोषी हूं, इसलिए जब तक मेरी जान है मैं यह काम

चेला नहीं है, न स्वामी है, न सेवक है, अपनी हस्ती होती है। वह अवस्था हमारा आद है वह ही गुरु है। तो गुरु हमसे अलग कहां था ? हम गुरु में रहते थे भ्रम था अज्ञान था बाहर दौड़ २ कर ढूंढ़ता फिरता था। समझता था कि कहीं हरिद्वार या किसी गद्दी में मिलेगा। तो बाहरी गुरु का क्या कर्त्तव्य है ? वो जीव को भ्रमों से निकाल कर उसको अपने घर में घर दिखला दे यानि यकीन करवा दे कि गुरु व सतगुरु उसके अपने अन्दर रहता है और उस को उस अपने रूप में ठहरा दे। जो गुरु ऐसा व्यवहार करके अपने शिष्य को इस मंजिल तक पहुंचा देता है उसे बाहरी गुरु कहते हैं। उससे इतना ही सम्बन्ध है, जो व्यक्ति इससे ज़्यादा बाहरी गुरु की इज्ज़त करते हैं वे मुर्ख हैं। कोई गुरु किसी को पुत्र या कुछ नहीं दे सकता। जो किसी को मिलता है वो उसके विश्वास, श्रद्धा व यकीन का फल मिलता है।

चूँकि मैंने देखा कि इस दुनिया के धर्मों के झगड़ें में क्या कुछ हो रहा है। मुसलमानों के अन्दर मुहम्मद या हज़रत अली प्रकट हो गया उसने अपनी बुद्धि से समझा की मुहम्मद साहिब या अली आया, किसी

ने समझा राम या कृष्ण आया या बाबा फकीर आया। इस प्रकार अज्ञान के कारण बुद्धि यानि माया के चक्र में आकर मानव जाति बट गई और इस बांट का परिणाम जो कुछ हुआ वो तुमने पाकिस्तान बनने के समय देख लिया या धार्मिक झगड़ों में तुम देख लो क्या हो रहा है। इस दशा को देख कर मैंने इस सचाई कोखोला है ताकि समझ बूझ वाले इन्सान आप समझ कर इस का प्रचार करें तो यह धार्मिक झगड़े न हों। यह झगड़े क्यों हैं। क्योंकि मुसल-मान को न मुसलमानपने का पता और न हिन्दुओं को हिन्दुपने का हो पता है। इसलिए कलियुग में संत प्रकट होते हैं वो आवाज़ देते है। फकीरों के यहां हिन्दु मुसलमान का कोई ख्याल नहीं क्योंकि वह सब को एक इन्सान समझते हैं।

शेष मैं शपथपूर्वक ब्यान करता हूं कि मैं किसी को सिवाय शुभ भावनाओं के कुछ नहीं देता या सच्चा ज्ञान दे सकता हूं, सच्ची बात बता सकता हूं। जो कुछ दुसरों को मिलता है वो उनके विश्वास का फल है। जो लोग विश्वास कर जाते हैं उनके काम हो जाते हैं। मैं अपनी जान को बचाने

कर रहा हूं। वही पुराने संस्कार जो हमारे ऋषि शिव संकल्पं अस्तु आदि कह गये इन्हीं बातों को मैंने नये ढंग से संसार में पेश किया है। हो सकता है कि मेरा बताने का ढंग ग़लत हो या जो मैंने समझा है वो ग़लत हो मगर मेरी ज़मीर मुझको आज्ञा नहीं देती कि मैं यह समझूँ कि मैं ग़लत हूं। मेरे जिम्मे Duty थी सो मैं पूरी कर चला कि ऐ भारतवर्ष के धार्मिक नेताओ व दुनियां वालो, यह तुम्हारा वर्तमान ढंग, धार्मिक घृणा, धार्मिक द्वेष और वर्तमान राजनीती, सब जगह यह वैर विरोध, यह तुम्हारी जान को तो क्या तुम्हारे खून को पीयेगा तुमने देख लेना यदि तुम आज नहीं सम्भलते तो मत संभलो। अगर मार खाने के बाद संभले तो क्या संभले। जैसा कि :—

अब पछताये क्या बने, जब चिड़ियां चुग गई खेत।

जो होता है होकर रहता है मैं भी जानता हूं कि कर्मगत नहीं टलती मगर मेरा जो कहना या बोलना है यह भी मेरे कर्मगत के अधीन ही है। यह भी मेरे वश में नहीं है।

आप लोग आते हैं मुझे भाषण देना नहीं आता। मैं अपने दिल के भावों को शब्दों में बताता हूं कि प्रत्येक इन्सान कोई न कोई गलती खाता है चाहे वो संत हो, परमसंत हो या अवतार हो। जो इन्सान शरीरधारी हैं जब वो शरीर व मन में आएंगे कभी भी पूर्ण नहीं हैं गलती सभी खाते हैं। पूर्ण तो केवल एक मालिक है। जब तक हम जीवित हैं शरणागतं। फकीर चन्द या किसी और गुरु को नहीं! बल्कि केवल उस एक को मानो।

किसी समय मैं दु:खी होता हूं और रोता हूं हो सकता है कि ऐ मेरी बहनों, माताओं व भाईयो! मैंने जो कुछ समझा हो सारा गलत हो यह दावा करना कि मैं जो कुछ कहता हूं यही ठीक है मैं नहीं मानता। जो कुछ मेरी समझ में आया वो कह चला। मान लो मैंने जो कुछ किया गलत किया तो मैं क्या करूं, बाबा सावन सिंह या दाता दयाल जानें जिन्होंने मुझे यह काम दिया? क्या उनकी आंख नहीं थी कि मैं सत्य प्रिय इन्सान हूं जो कुछ कहूंगा सच कहूंगा। उन्होंने काम क्यों दिया?

देखो एक बात कहता हूं, अपने अन्तर सुबह-शाम सच्चे बनकर पुकार किया करो, जो भी तुम्हारा इष्ट है जिस रूप में भी तुम उसे मानते हो उसे सामने रखकर अपने आप को उसके समर्पित किया करो। जहां तुम में सच्चाई आई प्रकृति तुम्हारी हर प्रकार से सांसारिक और परमार्थिक सहायता करेगी यह मेरी ज़िन्दगी का तजुर्बा है। उस का एक रूप मान लो उसको पूरा मान लो तुम्हारे सारे काम न हो जायें तो मैं जिम्मेवार हूं। इधर उधर क्यों भटकते फिरते हो, जैसी नीयत है वैसी मुराद मिलेगी, लोगों को अपने ही विश्वास, सच्चे प्रेम और श्रद्धा का फल मिलता है; मैं या कोई गुरु किसी को कुछ नहीं देता, तुम्हारे अन्दर ही सब कुछ है। तुम्हारी काया में सब संसार है, राम भी, कृष्ण भी, देवी भी, गुरु भी सब कुछ भरा हुआ है। सच्चे बनो। अपने अन्तर प्रार्थना किया करो। मांगो वो मालिक देता है, हर समय तुम्हारा साथी है यही मेरी समझ में आया जो मैं बता चला। जब अकेले बैठते हो अपने अन्दर में पुकार करो अगर आप की तकलीफें दूर न हों तो मैं जिम्मेवारी लेता हूं।

———

नकल पत्र जो परम दयाल जी महाराज ने श्री मोहन लाल नैय्यर साहिब दिल्ली निवासी को लिखा ।

मानवता मन्दिर

19-11-80

ओ प्यारे नैय्यर,

राधास्वामी ।

आजकल "गुलिस्ताने हज़ार रंग" नाम पुस्तक जो आपने बड़ी मेहनत करके दाता दयाल जी महाराज की तालीम का गुलदस्ता बना कर उर्दु भाषा में पेश किया था उस का अनुवाद हिन्दी भाषा में हो रहा है। हर रोज़ एक अध्याय सत्संग में पढ़ते हैं और जिस ने हिन्दी अनुवाद किया है है उसके साथ मिलाते हैं। मैं इस पुस्तक को हिन्दी

में छपवाऊंगा । हम कुछ आदमी बैठ कर यह दाता दयाल जी महाराज के विचारों को पढ़ते हैं और हृदय आनन्द मग्न हो जाता है ।

नैय्यर ! खेद है कि उस पवित्रविभूति की कदर संसार ने नहीं की। संसार को क्या कहूं मैंने भी नहीं की । मेरा प्रेम केवल भावुक था। अब आखें खुलती हैं कि वो क्या काम कर गये । यह ठीक है कि उनकी विद्वत्ता के कारण जो शब्द उन्होंने प्रयोग किये उनके आशय को साधारण जनता नहीं समझ सकती मगर मैं कोशिश करूंगा कि उन शब्दों को सरल हिन्दी में लिख कर जनता के सम्मुख रखूं ।

मैं आपका एहसान मानता हूं । मैं वो काम न कर सका जो आप ने किया । मैंने तो उनके संस्कारों से जो जीवन में अनुभव किया अपने निज अनुभव को अपने शब्दों में ब्यान किया । दाता दयाल जी महाराज के शब्दों की शकल में मैंने जाहिर नहीं किया । फिर भी मेरे ख्यालात से साधारण व्यक्ति जो ज्यादा पढ़े लिखे नहीं हैं लाभ उठा सकते हैं।

मैं इस पुस्तक में फोटो देना चाहता हूं अगर आपके पास Block हों तो भेज दीजिये। नहीं तो हम आप बनवा लेगें। यही मेरी इच्छा है कि शरीर त्याग करने से पहले यह किताब हिन्दी में छप जाये।

—आपका फकीर

वैसाखी का सतसंग

वैसाखी आ रही है। अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर चन्द! तूने यह झमेला क्यों मोल लिया। तेरे सतसंग कराने से क्या किसी को कुछ लाभ है अथवा केवल धन इक्ट्ठा करने के लिए और अपनी मान प्रतिष्ठा के लिए यह काम करता है ?

संसार वालो! बचपन से उस मालिक जिसको संसार भिन्न-भिन्न नामों से याद करता है की तलाश और प्रेम था। मेरा भाग्य अथवा मौज मालिक इस तलाश के क्रम में मुझे हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी के चरणों में 1905 में ले गई। उस पवित्र विभूति ने उस मालिक को मिलने के लिए मुझे संतों के मार्ग पर चलने का आदेश दिया। क्योंकि संत कबीर, राधास्वामी दयाल अथवा अन्य संतों ने अपने वचनों में सभी मतमतान्तर और धर्मों का

का खण्डन किया। मैं ब्राह्मण होने के नाते इस खण्डन को सहन नहीं कर सकता था। किन्तु दाता दयाल जी महाराज पर मेरा विश्वास नहीं टूटा। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा। जो कुछ मेरा अनुभव होगा वो बता जाऊंगा। इसके अतिरिक्त दाता दयाल जी महाराज ने तीन कर्त्तव्य मेरे जिम्मे लगाये थे :—

1. निवल, अवल, अज्ञानी जीवों की सहायता करना।
2. जगत् कल्याण निमित्त कार्य करना।
3. जीवों को भव-सागर से पार जाने की युक्ति बताना।

इस लिए मैं इस काम की ओर घसीटा जा रहा हूं। इस वैसाखी पर जो कि 13-14 अप्रैल 1981 को होगी मैं मानवता मन्दिर में वार्षिक सतसंग के अवसर पर अपने अनुभव के आधार पर संसार को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि एक मात्र संत-मत की शिक्षा ही संसार में घरेलु, राष्ट्रीय, सामाजिक

Miss Donna Brady,

We, the residents of Manavta Mandir, welcome you to this institution. Since, you have come from a distant place, we wish you to take something from this seat of spirituality, truth and reality. Our's is an institution, unique and unparalleled in the world. The morning prayer of our Shishu Shiksha Kendra is different from those sung at other places. Our's is based on Manavta, whereas others are religion based. Now please listen to the prayer. I shall be explaining the same to you simultaniously.

हम सब बालक प्यारे मालिक, तेरी महिमा गायेंगें,
भले सयाने सुगुरे बनकर, मानवता अपनायेंगें ।

O, Supreme Lord, we would sing song of your greatness. We would ever remember you Since you are the Source Infinity with which we are in oneness and from which we have emerged incourse of Evolution. We pray to become noble & wise to follow the path of Manavta.

मानवता है शान बड़ाई, सारी मानव जाति की,
काम करेंगे अच्छे जग में, देश का मान बढ़ायेंगे ।

The honour and greatness of man lies in Manavta. Manavta means the supreme greatness of humanbeings due to the over all noble and good deeds of man. We pledge to do good and enhance the honour of our mother land in the universe.

मात पिता की सेवा करके, भाई बहन से प्यार,
प्रेम का जीवन काटेंगे, घर को स्वर्ग बनायेंगे ।

Survice to parents and the elders and love and affection towards the brothers & sisters would be our moto. According to the teachings of his Holiness Dayal Faqir, affection and love practice at home would lead to an atmosphere of universal brotherhood and unity. This would ultimately convert home into heaven.

मानवता ही धर्म है सच्चा, मानवता ही पंथ,
इसी राह पर चल कर हम भी, मानवता फैलायेंगे ।

कर्म भोग

मेरे साहित्य को पढ़ने वालो ! कुछ कहना चाहता हूं । मैंने जीवन भर किसी चीज़ की तलाश के प्रभावाधीन बड़ी सच्चाई से काम किया । प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा । दाता दयाल जी महाराज का आदेश था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना । आज 43 साल से मैं यह काम कर रहा हूं । मुझे यह दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा व अनुभव किया है यह सब लोगों को लाभ पहुंचा सकता है । मेरी अपनी कुरीद अर्थात् हार्दिक खोज को समाप्त करनें के लिये मैं अपने लिये इस अनुभव को सत्य मानता हूं ।

अब मैं बूढ़ा हो गया । मौज अथवा मेरे कर्मों के कारण मैं इस मानवता मन्दिर बनाने के सिलसिले में फंस गया । केवल एक खुशी है कि

इस फंसाओ में मैंने निज स्वार्थ अर्थात धन, मान प्रतिष्ठा आदि नहीं रखा।

मन्दिर में तीन हस्पताल हैं शिशु स्कूल, प्रैस, लायेब्रेरी और फ्री लंगर हैं। खर्चे बहुत बड़ गये हैं। लगभग 4500 रुपये हर महीने कर्मचारियों को वेतन दिया जाता है। 70000 रुपये की दवाइयां हस्पताल में दी गई हैं। शिशु स्कूल में बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती। आगे सेहत अच्छी थी तो बाहर दौरा करता था। कुछ तो सच्चाई ब्यान करने का अपना कर्तव्य पूरा करता था और कुछ मन्दिर के लिये रुपया जो कोई खुशी से देता ले आता था। अब शरीर अधिक काम नहीं कर सकता। यदि मेरा साहित्य पढ़ने वाले समझते हैं कि मेरा काम प्राय: सब अधिकारी जनता के लिये लाभदायक है तो जो इच्छा हो मन्दिर की सेवा करें।

तमाम साहित्य जो मन्दिर से प्रकाशित होता है डाक खर्च सहित मुफ्त जाता है। मन्दिर पुस्तकों की सूची प्रकाशित कर देता है जो चाहें मुफ्त

मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि जो सज्जन मेरे विचारों से सहमत हैं वे अपना जीवन क्रियात्मिक बनायें। पुस्तकें या सत्संग केवल मन के भ्रम शंकायें दूर कर सकते हैं। यदि अमल नहीं है तो यह पढ़ना लिखना भी एक प्रकार की खुशी देगा, अमली शान्ति नहीं मिलेगी। अधिक क्या लिखूं चले चलाओ का समय है, मैंने वसीअत *(Will)* कर दी है कि मेरे बाद शर्मा दयाल जिन का पूरा नाम डाक्टर इश्वर चन्द्र शर्मा है (जो अमेरीका में हैं) और मुन्शी राम भगत मानवता और रुहानियत का प्रचार करेंगे। मन्दिर का सारा काम ट्रस्ट वालों के अधीन हैं। ट्रस्ट वालों को कह चला हूं कि अगर किसी समय आर्थिक सहायता न मिलने के कारण काम न चल सके तो हस्पताल आदि बन्द कर दें केवल प्रकाशन का काम जारी रखें। अगर यह भी न चल सके तो दाता दयाल जी महाराज का *(Statue)* धरती में गाड़ दें और मन्दिर की सारी सम्पत्ति सरकार या किसी और संस्था को दे दें।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ । 2. ਅਨੁਭਵ ਵਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ । 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ । 4. ਮਾਨਵਤਾ 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ । 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ । 7. ਨਾਮ ਦਾਨ

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manvta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America.
14. Yogic Philosophy of Saints.
15. Nam Dan 16. Autobiography of Faqir

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1) अगम का भेद । 2) कबीर साखी । 3) अनुभवसार

बन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम॥
तेरी शरनागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥

रूप ध्याऊँ नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥

सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरन लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरन तेरी आय॥

मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सतसंग
15-3-81 को होगा।

गतांक से आगे]

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

अर्थात् वह परम सत्ता, ईश्वर, ब्रह्म अथवा राधास्वामी आदि अपने आप में पूर्ण है। यह मनुष्य अथवा आत्मा उस पूर्ण आधार से पैदा होने के कारण अपने आप में पूर्ण है। जब मनुष्य अपने आपको जान लेता है तो उसे परम सत्ता का भी ज्ञान हो जाता है। "फकीर बाबा कहते है" मालिक के असली रूप को पहचानो, मालिक तो तुम्हारे अन्दर है। वह शब्द और प्रकाश का आधार है। सारे ब्रह्माण्ड का आधार है। वह अकाल पुरुष है। वह देह, मन और प्रकाश से परे है।"

जब तक मनुष्य मन के स्तर तक रहता है, तब तक चाहे वह योगी हो, तपी हो, ध्यानी हो, असली ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता और अशान्त रहता है। इस का कारण यह है कि मन सुख दुःख प्रसन्नता अप्रसन्नता दोनों का देने वाला है। सदा आनन्द की अवस्था तो सुख दुःख, प्रसन्नता अप्रसन्नता, लाभ हानि तथा जीवन मरण से परे हैं।

सारा संसार मन के चक्कर में फंसा हुआ है। जो कुछ मन कहता है हम वही करते हैं। अच्छाई भी मन कराता है और बुराई भी मन कराता है। योगी, व्रती तथा सन्यासी भी मन के चक्कर में फंसे रहते हैं। फ़कीर बाबा के शब्दों में :

मन ही ज्ञान है, मन ही ध्यान है, मन ही मोक्ष और भोग ॥
मन में वेद को पढ़ते ब्रह्मा, शंकर करते योग ॥
मन ही अन्दर सृष्टि व्यापी, मन ही है रोग ॥
मन गोविन्द मन गोरख रूपा, मन ही योग वियोग ॥
मन ही पानी, मन ही अग्नि, मन ही आनन्द साग ॥
मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संयोग ॥
मन ही का व्यवहार जगत में, नाहीं जानें यह लोग ॥

जब तक मनुष्य मन के वास्तविक रूप को नहीं पहचान लेता, तब तक उसे न ही सांसारिक सुख मिल सकता है और न ही वह मोक्ष की और बढ़ सकता है। यही कारण है कि फ़कीर बाबा, ने मानवता के धर्म को सबसे ऊंचा बताया है।

मनुष्य का वास्तविक रूप जिसे फ़कीर बाबा मनुष्य की उत्पत्ति कहते हैं, प्रकाश से सम्बन्धित है। यह वही प्रकाश है, जो परम सत्ता के धाम सत् लोक से निकलता है। उन्होंने मनुष्य की इस उत्पत्ति

को वैज्ञानिक ढंग से विकासवाद के आधार पर बताया है। उनकी यह व्याख्या उपनिषदों और वेदों के सत्य से मेल खाती है, यद्यपि उन्होंने इसका ज्ञान वेदों को न पढ़ कर, सुरत शब्द योग अथवा सन्त मत योग के द्वारा प्राप्त किया है। उनकी व्याख्या में नई बात यह है कि उन्होंने यह बताया है कि विज्ञान का सत्य वेदों का सत्य तथा सन्तों द्वारा अनुभव किया गया सत्य एक ही है।

फ़कीर बाबा ने अपने अनुभव के आधार पर विज्ञान के सिद्धान्तों को भी स्पष्ट किया है। इस बात को प्रमाणित करने के लिए कि मनुष्य की उत्पत्ति चाहे सनातन धर्म, चाहे विज्ञान, चाहे सन्त मत की दृष्टि से क्यों न देखी जाय, एक ही परम आधार से हुई है। यहां पर फ़कीर बाबा के कथन को प्रस्तुत करना आवश्यक है:

"मैं आधुनिक युग का मनुष्य हूं। विज्ञान कहता है कि जीवन का विकास जल से हुआ है। पानी में छोटा सा जन्तु अमीबा वनस्पति में विकसित हुआ, इसके पश्चात पशुओं, पक्षियों आदि का विकास हुआ। पशुओं के विकास में वानर सबसे ऊंचा

माना गया है और यह कहा गया है कि मनुष्य का रूप वानर से ही विकसित हुआ हैं। हिन्दु धर्म ग्रन्थ इस बात से सहमत है कि जीवन की उत्पत्ति जल से हुई। हिन्दु धर्म के अनुसार ईश्वर के चौबीस अवतार हुए हैं। पहला अवतार मच्छ का हुआ, उसके पश्चात कच्छ, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम चन्द्र और कृष्ण आदि के अवतार हुए। इस प्रकार हिन्दु धर्म ग्रन्थों ने निश्चितरूप से जल को ही जीवन की उत्पत्ति का कारण माना है, क्योंकि मच्छ का अवतार पानी में ही हुआ। सन्त कहते हैं कि हम अपने सच्चे धाम से निकले हैं और अनेक योनियों में भटकते रहे हैं। सौभाग्य से हमें मनुष्य योनि में जन्म मिला है। यदि हम इस मनुष्य जन्म में किसी परम गुरु एवं सत् पुरुष को आज्ञा पालन करें, नाम का अभ्यास करें तथा गुरु से सच्चा प्रेम रखें तो हम अपने असली घर वापिस जा सकते हैं।

मैं इस प्रश्न पर कई बार विचार करता हूं, 'जल में जीवन कहां से आया ?' जल का कारण वायु है, वायु का स्रोत अग्नि है अग्नि आकाश से उत्पन्न होती है और आकाश का आधार शब्द है। जल में

प्रकाश और शब्द के गुण हैं। इस प्रकार जल धीरे-धीरे जीवन के अनेक स्तरों से गुज़र कर मनुष्य के रूप में विकसित हुआ है। वही प्रकाश हमारे अन्दर निवास करता है। यह प्रकाश कहां से आया? यह प्रकाश सतलोक से आया है। सत्लोक ही प्रकाश का परम स्रोत है उसी परम धाम से ही उस प्रकाश की किरणें निकलती हैं, जो मनुष्य में, पशुओं में तथा ब्रह्मा, विष्णु और शिव एवं देवताओं में उपस्थित हैं।"*

इस प्रकार मनुष्य की उत्पत्ति को प्रकाश से और जीवन के विकास को जल से मान कर फकीर बाबा इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि मनुष्य परम सत्ता एवं उस सत्लोक से आया है, जोकि प्रकाश का अनन्त समुद्र है। इसीलिए ही मनुष्य अपने अनन्त धाम को वापिस लौट सकता है। क्योंकि प्रकाश सूक्ष्म अथवा कारण रूप में मनुष्य का मूल स्रोत है, इसलिए आत्मा कारण शरीर होते हुए प्रकाश से सम्बन्धित है। पिछले अध्याय में जिन चमत्कारों का वर्णन

---

*फ़कीर सन्देश, होशियारपुर पृष्ठ ९-१०

किया गया है वे सभी प्रकाश से सम्बन्धित हैं। जहां, जहां भी लोगों ने फ़कीर बाबा के रूप को देखा है, उनका कहना है कि वे फ़कीर बाबा के रूप को प्रकाश से निकलता हुआ देखते हैं। क्या यह प्रकाश फ़कीर बाबा के कारण शरीर से उत्पन्न होता है ? इस प्रश्न का उत्तर यहां नहीं दिया जा सकता। जो कुछ हमने ऊपर कहा है, उसका अभिप्राय यह है कि प्रकाश के अधार पर ही चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या दी जा सकती है।

वे लोग जो केवल चमत्कारों से ही मुग्ध होते हैं ईश्वर के किसी न किसी रूप में अन्ध विश्वास रखते हैं, किन्तु वे ईश्वर के वास्ताविक रूप को नहीं जानते। बाबा फ़कीर ने जीवन भर ईश्वर के सच्चे रूप को जानने की खोज की है। उन्होंने सच्चाई से अपने अनुभवों को अभिव्यक्त किया है। एक साधारण मनुष्य के लिए अन्ध विश्वास, चमत्कार, रूढ़िवाद, तथा कर्मकाण्ड आदि के चक्कर से बाहर निकलना बहुत कठिन होता है। जैसे कि हम आगे चल कर देखेंगे फ़कीर बाबा ने अपने जीवन में विश्वव्यापी मन अथवा सहस्रदल कमल के प्रभाव का अनुभव किया है।

उन्होंने स्वयं भगवान राम तथा भगवान कृष्ण का साक्षात्कार किया है, किन्तु वह इन अनुभवों से सन्तुष्ट नहीं थे। इस बात का स्पष्टीकरण आगे चल कर होगा कि उन्होंने अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य सच्चे ईश्वर का ज्ञान कैसे प्राप्त किया। यहाँ पर यह बताना आवश्यक है कि मनुष्य का आन्तरिक रूप एवं मनुष्य की मानसिक शक्ति असीम है। इसी मानसिक शक्ति के प्रभाव के कारण ही लोग तथा-कथित चमत्कारों का अनुभव कहते हैं। इस शक्ति को विश्वव्यापी मन एवं सहस्रदल कमल से सहायता मिलती है। यह विश्व व्यापी मन देश, काल और कारण के जगत में अपना काम कर रहा है। फ़कीर बाबा इसे काल कहते हैं। हिन्दु धर्म ग्रन्थों में भी इसे काल पुरुष कहा गया है। देश, काल और कारण इस जगत् के तीन पक्ष हैं। सच्चा ईश्वर इन तीनों से परे हैं। कोई भी गुरु अथवा धार्मिक अधिकारी जो अपने अनुयायियों से इस सत्य को छुपाता है, वह सच्चा गुरु नहीं है। यह सम्भव है कि ऐसे गुरु को स्वयं ईश्वर के सच्चे रूप का अनुभव नहीं हुआ। फ़कीर बाबा ऐसे गुरुओं के स्तर के सम्बन्ध में कोई टिप्पणी नहीं करते। वह तो बलपूर्वक कहते हैं कि किसी भी

मत अथवा धर्म के अनुयायी, जो राम, कृष्ण जेहोवा अथवा जीज़स क्राईस्ट अथवा मोहम्मद आदि के रूपों का अनुभव करते हैं, उनका यह अनुभव रूप विशेष में अगाध विश्वास होने के कारण ही होता है।

मनुष्य के वास्तविक स्वरूप के उस दर्शन पर प्रकाश डालना आवश्यक है, जिसकी व्याख्या फ़कीर बाबा ने सरल भाषा में की है। उनका यह दर्शन (Philosophy) केवल विचार पर ही आधारित नहीं है, बल्कि वह मनुष्य के सच्चे रूप के अनुभव पर आधारित है। उसमें यह बताया गया है कि मनुष्य का ईश्वर से क्या सम्बन्ध है। मनुष्य का आन्तरिक रूप क्या है और ईश्वर क्या है, अनेक ऋषियों, विचारकों तथा वैज्ञानिकों ने इन प्रश्नों पर गहन विचार किया है। इन सभी की व्याख्याओं और धार्मिक अनुभव का सार यह है कि "मनुष्य ईश्वर का ही रूप है।" दार्शनिक कहते हैं कि जो कुछ छोटी से छोटी वस्तु में है, अर्थात् पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड में है। जैसा कि पहले बताया गया है फ़कीर बाबा वेदों के इस वाक्य को मानते हैं कि मनुष्य पूर्ण ब्रह्म से पैदा होने के कारण स्वयं पूर्ण है। यहूदियों तथा ईसाईयों के

धर्म ग्रन्थों में भी यही कहा गया है कि "मनुष्य ईश्वर की प्रतिमा है।"

फ़कीर बाबा द्वारा दी गई उपमा बहुत सरल है और वह मनुष्य और ईश्वर की सदृश्यता की सीधी व्याख्या है। वह कहते हैं कि ईश्वर के तीन मुख्य लक्षण हैं : स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण। उसका स्थूल लक्षण उस की स्थूल सृष्टि की शक्ति, उसका सूक्ष्म लक्षण उसकी सर्वज्ञता और उसकी कारणता का लक्षण उस की सर्वव्यापकता है। मनुष्य में भी ईश्वर के ये तीनों लक्षण उपस्थित हैं। किन्तु ईश्वर इन तीनों लक्षणों से परे भी है। फिर भी जो व्यक्ति ईश्वर को देखना चाहे, उसे इन्हीं तीन लक्षणों को अपने आप में देखना चाहिए। मनुष्य में ईश्वर का स्थूलरूप उसके वीर्य (Semen) में है, जिससे वह सन्तान उत्पन्न करता है। ईश्वर का सूक्ष्म रूप मनुष्य के मन अथवा विचार या इच्छा में है। ईश्वर का कारणात्मक रूप वह प्रकाश है, जो सारे विश्व की तथा मनुष्य की आन्तरिक पोषक शक्ति है। फ़कीर बाबा के शब्दों में :

"एक बार एक व्यक्ति बनारस से आया और उसने मुझे कहा कि वह ईश्वर को देखना चाहता है

पूजा करने वाला वह व्यक्ति नहीं है, जो केवल अन्ध विश्वास के कारण मन्दिर अथवा गुरुद्वारे में जाता है, घंटियां बजाता है अथवा ईश्वर की स्तुति में गीत गाता है, परन्तु सच्चा पुजारी वह है, जो अपने वीर्य को अनावश्यक नष्ट नहीं करता, जिसके विचार शुद्ध और धार्मिक हैं और जो अपने अन्तर में प्रकाश की अवस्था में रहता है। सनातन धर्म की सन्ध्या की प्रार्थना में भी यही सत्य लिखा हुआ है। किन्तु दुःख की बात यह है कि आजकल सनातन धर्म केवल रीति-रिवाजों और मन्त्रों के उच्चारण तक ही सीमित रह गया है। कोई व्यक्ति गायत्री मन्त्र के अर्थ को समझने का प्रयत्न नहीं करता और उस मन्त्र में बताए गए प्रकाश का चिन्तन नहीं करता। मनुष्य अपने अन्तर के प्रकाश के केन्द्र को तभी पकड़ सकता है, जब वह ब्रह्मचर्य का पालन करे और शुभ विचार रखे। प्रसन्न और सुखी जीवन बिताने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वह अपने अन्तर में स्थित ईश्वर के इन तीन रूपों को समझे तथा उनका अनुभव करे।"*

---

*The Art of Living by Faquir Baba P. ४४-४५

इससे यह स्पष्ट होता है कि सनातन धर्म में सिद्धान्त के रूप में वही सत्य दिया हुआ है, जिसे सन्त मत मानता हैं। कमी केवल व्यवहार की है। फ़कीर बाबा ने सरल शब्दों में ईश्वर के सच्चे रूप को देखने एवं अनुभव करने के लिए ऊपर दिए गए उदाहरण में एक व्यावहारिक उपदेश दिया है।

फ़कीर बाबा के इस व्यावहारिक उपदेश पर विशेष ध्यान देना चाहिए। मनुष्य मन के चक्र से और चमत्कारों के भ्रम से तब तक ऊपर नहीं उठ सकता, जब तक कि वह इस व्यावहारिक उपदेश को जीवन में नहीं उतार लेता। सांसारिक सुख तथा आध्यात्मिका अंग व्यक्ति के अन्तस में उपस्थित हैं। वह व्यर्थ ही उन्हें अपने से बाहर ढूंढने का प्रयत्न कर रहा हैं। उसका कारण यह है कि मनुष्य को अपने आप का तथा ईश्वर का सच्चा ज्ञान नहीं है। मनुष्य की पूर्णता केवल तभी अभिव्यक्त हो सकती है, जब पूर्ण गुरु सत पुरुष के उपदेश को जीवन पर लागू किया जाय। मनुष्य की गुप्त पूर्णता उसे धीरे-धीरे चमत्कारों के मानसिक स्तर पर ले जा सकती

हैं और उसके पश्चात उसे परम धाम की ओर भी ले जा सकती है।

पूर्णता के मार्ग में अनेक ऐसे प्रलोभन सामने आते हैं जो मनुष्य को चमत्कारों के मानसिक स्तर से आगे नहीं बढ़ने देते। फ़कीर बाबा ने यह ठीक चेतावनी दी है कि चमत्कारों के स्तर को ईश्वरानुभूति का परम स्तर नहीं समझ लेना चाहिए। फ़कीर बाबा उस सन्त मत की पुष्टि करते हैं, जो सत्य का धर्म है जो ईश्वर और मनुष्य दोनों के यथार्थ रूप एवं सत्य का धर्म है। मनुष्य ईश्वर का वास्तविक तथा सच्चा रूप है। उसका मन कालका मानसिक स्तर है, उसी का नाम माया है। यही मन उसे देश काल और कारणता की सीमाओं से मुक्त भी कर सकता है और जन्म मृत्यु के आवागमन के बन्धन में भी डाल सकता है। फ़कीर बाबा ने इस बात पर बल दिया है कि यदि मनुष्य सच्चे रूप से मनुष्य बन जाय, तो वह मानसिक स्तर से ऊपर उठ कर अपने जीवन के परम लक्ष्य को भी पा सकता है। इसके साथ ही साथ सच्चा मनुष्य बन कर अथवा

अपने यथार्थ रूप को जान कर धार्मिक भेदों को भ्रम मान कर सभी धर्मों में परस्पर सहयोग ला सकता है। इस प्रकार धर्म के नाम पर मनुष्य जाति का जो बटवारा हुआ है और हो रहा है उसे रोका जा सकता है। इस संसार में धर्म की कट्टरता के कारण और चमत्कारों को व्यक्तियों से सम्बन्धित करने के कारण आज तक ईश्वर के नाम पर जो अन्याय हुए हैं और हो रहे हैं, उनका एकमात्र उपचार मानवता धर्म ही है। फ़कीर बाबा के द्वारा प्रतिपादित मानवता धर्म, सभी धर्मों के परस्पर सहयोग तथा शान्ति पूर्वक सह-अस्तित्व के द्वारा मानवमात्र को सच्चे ईश्वर की ओर ले जा सकता है। "मनुष्य बनो" का दर्शन मत मतान्तरों से परे है। वह एक पूर्ण सहयोगात्मक दर्शन है और उसका दृष्टिकोण वैज्ञानिक तथा वास्तविक है। यह दर्शन मनुष्य के आन्तरिक स्वरूप और यथार्थ ज्ञान देने वाला है।

इस बात को स्पष्ट करने के लिए कि मनुष्य का सच्चा रूप हमें रूढ़िवाद तथा अन्धविश्वास से कैसे

बचा सकता है, तथाकथित चमत्कारों की व्याख्या विस्तारपूर्वक करनी पड़ेगी, इसलिए इस अध्याय के पश्चात, चमत्कारों के मुख्य प्रकारों की व्याख्या दी जायेगी।